रात्रिक्लास 14-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

तुम्हारे बाबा को हम रथ में बिठा रोज़ ले आते हैं। ऐसे नहीं सदैव रथ पर ही है। वह तो स्वतंत्र है। जानते हो बाबा रथ प्रेरक है। रथी सवार है। तुम बच्चों को अपना और रचना का परिचय देते हैं। तुम कहते हो हम बाप-दादा, रथ-रथी पास जाते हैं। और तो कोई ऐसा होता है। बाप का ही कल्प के संगम युगे2 पार्ट चलता है। संगमयुग को तुम ही जानते हो। तुम कितना दूर से आते हो। कहते हो हम बेहद के बाप पास जाते हैं। वह टीचर भी सदगतिदाता भी है। ब्रह्मा द्वारा एक धर्म की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश। आंख आद खोलने की बात नहीं। तुम जानते हो पैमन आद होगा। उन पर क्यों दोष रखते हो। शिव बाबा को तो पार्ट ही है। इनका भी पार्ट है अलग। हरेक आत्मा पार्टधारी है। परमात्मा को तो रथ चाहिए ना। मनुष्य नहीं जानते। हम भी बड़ा भक्त था। 12 गुरु किये हैं। जो आता था उन से पूछता था। यहां भी आते हैं पूछा जाता है गुरु किया है। फिर क्यों आये हो? कहते हैं कोई सहज रास्ता भगवान से मिलने का मिल जाये तो। सुनते हैं तो समझते हैं यहां तो बहुत सहज है। फिर अनुभव सुनाते हैं कैसे हमको निश्चय हुआ। बहुत ही थोड़ा सुनने से दिल लग जाती है। बन्धेलियों को भी सा0 होती है। रमआबजेक्ट है। कृष्ण की राजाई में तुम जा सकते हो। परन्तु ब्रह्मा द्वारा। कृष्ण को सभी बहुत प्यार करते हैं। ल0ना0 से कृष्ण जास्ती प्यारा लगता है। जन्माष्टमी पर बुलाते हैं। उन बिचारों को पता नहीं है कि ल0 ना0 और कृष्ण एक ही है। यह सभी बातें बाप बताते रहते हैं। सारी दुनिया का बाप है ना। तो बाप को सभी मालूम नहीं होगा घर का। बाप है ना। रचयिता है। सारी दुनिया को जानते हैं। इसलिए बेहद का बाप, बेहद का वर्सा, बेहद का ज्ञान मिलता है। फॉरेनर्स इतनासीढ़ी से नहीं समझ सकते हैं। जितना चक्र और झाड़ से। गीता में भी है झाड़ जड़-जड़ीभूत हो गया है। सीढ़ीसे और धर्म वाले नहीं समझेंगे। इसमें तुम्हारे 84 का चक्र है। तुम बच्चे तो जानते हो वहां जाती आदमशुमारी होती नहीं। और गिनती करने की भी बात नहीं रहती। वहां के रसम-रिवाज़ ही अलग रहती है। आगे चल कर मालूम पड़ता जाये ही सकता है। ड्रामा पर भी बहुत मुंझेंगे। कहेंगे सोना खलास हो गया फिर कहां से आवेगा। खानियां भरतू हो जावेंगी और क्या। अभी खाली हो गई है। फिर सभी नई हो जावेंगी। इन बातों में मुंझना न चाहिए। एक बात पक्की करो आत्मा तमोप्रधान बनी है। अभी मामेकं याद करो तो पावन बन सकेंगे। तुम पतित हो इसलिए पर टूटे हुये हैं। उड़ नहीं सकते हो। बुलाया ही है पावन होने लिए। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो शक्ति मिल जावेगी। यह बात तो सहज है ना। और कोई उपाय ही नहीं। यहां जब आते हो तो खुशी का पारा चढ़ जाना चाहिए। बाहर में तो वायुमंडल बहुत खराब रहता है। जैसे जंगली जनावर हैं। नया मकान बनता है तो खुशी होती है ना। तुम भी कहेंगे हमारी नई दुनिया बन रही है। इसका नाम ही है स्वर्ग। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। हम अपने बेहद के बाप पास जाते हैं। वहां का लाने लेते हैं। औरों को भी समझाने लिए मेहनत करते रहते हैं। प्रजा बहुत बनती है। पुरुषार्थ तो करना चाहिए नाम ऊंच पद पाने का। घर बैठे याद तो करते हो ना। जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म करने में मेहनत लगती है। तुम बच्चों ने भक्ति-मार्ग में कितने धक्के खाये हैं। अभी तुमको कोई तकलीफ नहीं देते हैं। ले ही जावेंगे सभी को। जो परिस्तानी थे वही काम चिक्षा पर बैठ कब्रस्तानी बने हैं। अभी फिर बाप को याद कर परिस्तानी बनना है। उस बाप को सभी याद करते हैं। तो तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। याद से ही बेड़ा पार होगा। तुम आते हो रिफ्रेश होकर जाते हो। फिर दूसरों को जाकर रिफ्रेश करते हो। आत्मा इन जैसे रिफ्रेश हो जाती है। यह ज्ञान गुम हो जाता। शास्त्र आद सभी है भक्ति-मार्ग के। ज्ञानसदगति का एक ही है। अच्छा मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

-: : ओमशान्ति : :-